ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 38 कुल पृष्ठ-8 30 सितम्बर से 6 अक्टूबर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 आ.कृ.-09

आर्य समाज की महान विभूति कर्मठता, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण की साक्षात् प्रतिमूर्ति

पूज्या माता जगदीश रानी आर्या का अमृतसर में निधन

सैकड़ों आर्यजनों ने नम आँखों से दी अन्तिम विदाई एवं श्रद्धांजलि

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी श्रद्धांजलि सभा में पहुँचे

आर्य समाज की महान विभूति एवं कर्मठता, कर्त्तव्यनिष्ठा, समर्पण तथा सेवाभाव आदि गुणों से ओत–प्रोत व्यक्तित्व की धनी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की उपप्रधान पूज्या माता जगदीश रानी आर्या जी का गत् 17 सितम्बर, 2021 को उनके निवास स्थान अमृतसर में निधन हो गया। वे लगभग 93 वर्ष की आयु पूर्ण करके नश्वर देह को छोड़कर विदा हो गई। उनकी अन्त्येष्टि पूर्ण वैदिक रीति से की गई और अमृतसर के विभिन्न आर्य समाजों तथा अन्य संगठनों के सैकड़ों लोगों ने उन्हें अश्रुपूर्ण विदाई दी। उनकी स्मृति में 18 सितम्बर, 2021 को अमृतसर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी व मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य, सभा के उपप्रधान श्री अरविन्द मेहता, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री इन्द्रपाल आर्य, सभा के मंत्री श्री राकेश, आर्य प्रतिनिधि सभा जिला गुरुदासपुर के प्रधान श्री तरसेम लाल आर्य, प्रो. केवलकृष्ण आर्य अवांखा, बहन मधुर भाषिणी आर्या दीनानगर, श्री राकेश काठिया एडवोकेट–रमदास, आर्य महिला परिषद् की प्रधाना श्रीमती सुलोचना आर्या, आर्य समाज मॉडल टाउन के प्रधान श्री जवाहर लाल आर्य, आर्य समाज हरिपुरा के प्रधान श्री राजपाल आर्य, श्री इन्द्रजीत आर्य, श्रीमती वन्दना आर्या, श्रीमती राकेश आर्या, श्री धर्मेन्द्र आर्य–दिल्ली एवं विभिन्न समाजों के पुरोहित (धर्माचार्य) श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित हुए। श्रद्धांजलि सभा की कार्यवाही का संयोजन प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य डॉ. नवीन आर्य ने किया। श्रद्धांजलि सभा से पूर्व शांति यज्ञ माता जी के छोटे सुपुत्र श्री प्रवीण आर्य के निवास पर किया गया जिसमें उनके दोनों बेटे श्री अरुण आर्य एवं श्री प्रवीण आर्य सपत्नीक यजमान बनें। उनके अतिरिक्त माता जी की दोनों सुपुत्रियाँ श्रीमती शशि आर्या व श्रीमती वीणा आर्या भी सपरिवार यज्ञ में सम्मिलित हुईं। उनके अतिरिक्त माता जी के परिवार के सभी सम्बन्धी, शुभचिन्तक एवं इष्ट मित्र भी यज्ञ में उपस्थित थे। शांति यज्ञ श्री विजय कुमार शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

स्व. माता जगदीश रानी आर्या

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी परिवारजनों को ढांढस बंधाते हुए दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने परिवार के सभी छोटे–बड़े सदस्यों एवं सम्बन्धियों को प्रेरित किया और संकल्प दिलवाया कि वे पूज्या माता जी के पद्चिन्हों पर चलते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के विचारों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे और आर्य समाज के कार्यों में बढ़–चढ़कर अपना योगदान देते रहेंगे।

श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए श्री इन्द्रपाल आर्य ने माता जी के जीवन से जुड़ी हुई कई घटनाओं का वर्णन करके उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि माता जी जैसा जीवन विरले लोगों को मिलता है। उन्होंने आर्य सिद्धान्तों के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश जी ने माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित हुए कहा कि वे हम सबकी माता थीं और उन्होंने पूरे जीवनभर आर्य समाज के लिए दिन–रात एक करके कार्य किया। आर्य जी ने अपना अनुभव प्रस्तुत करते हुए बताया कि माता जी से अनेक बार मेरा विविध विषयों पर मतभेद हो जाता था किन्तु उनके हृदय में कभी भी मेरे प्रति द्वेष या संकीर्णता नहीं आई। उन्होंने महर्षि दयानन्द धाम के लिए जो कार्य किया और उसके निर्माण में जो भूमिका निभाई वह सदैव अविस्मरणीय रहेगी। मैं उन्हें महर्षि दयानन्द धाम तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें शांति प्राप्त हो और अगला जीवन भी उनका वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में लगे।

युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

4 अक्टूबर जन्म दिवस पर विशेष

महान क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

महान् देशभक्त एवं क्रान्तिकारी शिरोमणि श्यामजी ‘कृष्ण वर्मा स्वातन्त्र्य समर के अप्रतिम योद्धा थे। स्वतन्त्रता यज्ञ के लिए उन्होंने अपने आपको समर्पित किया हुआ था। इस याज्ञिक अग्नि का आधान किया था आग्नेय व्रती आग्नेय वस्त्र धारी महर्षि दयानन्द ने। वह स्वाधीनता का सर्वप्रथम उद्घोषक था। उसने ही अपने प्रवचनों तथा लेखन के माध्यम से इस अग्नि को प्रज्ज्वलित किया था। यज्ञ सामान्य अग्नि नहीं, अपितु स्वातन्त्र्य यज्ञ की अग्नि थी जिसमें स्वधीनता के पुजारी स्वेच्छा से आ-आकर अपनी आहुतियां दे रहे थे। महर्षि दयानन्द ने इसका आधान किया तथा क्रान्तिकारियों ने इसमें अपनी आहुतियाँ देकर इसे सर्वव्यापी बनाया, बढ़ाया, चमकाया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी अपना जीवन इस अग्नि को समर्पित कर दिया। श्यामजी महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य थे। महर्षि ने उन्हें विदेश जाने की प्रेरणा दी। महर्षि दयानन्द चाहते थे कि श्यामजी विदेश में जाकर भारतीय स्वतन्त्रता की अलख जगाएं तथा वहां के कला-कौशल के आधार पर भारतीयों की निर्धनता के निवारणार्थ यत्न करें। महर्षि दयानन्द से श्यामजी की भेंट 1875 ई. में हुई तभी उन्होंने मुम्बई आर्य समाज की सदस्यता भी ग्रहण की जो कि महर्षि के द्वारा स्थापित सर्वप्रथम समाज था। 1883 ई. में महर्षि ने श्यामजी को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर, 1857 को सौराष्ट्र गुजरात प्रदेश के मांडनी ग्राम में श्री कृष्ण जी वर्मा के घर हुआ था। 1875 में उनका विवाह सेठ छबीलदास लल्लू भाई की सुपुत्री भानुमती से हुआ। 1877 में श्याम जी ने समाज सुधार के लिए उत्तरी तथा पश्चिम भारत की यात्राएं की। श्यामजी असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। 5 फुट 10 इंच लम्बा उनका गठीला शरीर तथा तेजस्वी मस्तक सभी को अपनी ओर आकृष्ट करता था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा अप्रतिम विद्वान् थे। संस्कृत साहित्य पर उनका असाधारण अधिकार था। इसके साथ ही उन्हें यूरोपीय संस्कृति तथा साहित्य का भी अच्छा ज्ञान था। वे अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के भी ज्ञाता थे। अपने अगाध ज्ञान के आधार पर श्यामजी कुशल लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता थे। उनके भाषण तथा लेख तथ्यों से भरपूर होते थे जोकि पाठकों तथा श्रोताओं पर अद्भुत प्रभाव डालते थे। लंदन के ट्राईड पार्क में उनके भाषण से प्रभावित होकर ही मैडम कामा क्रान्तिकारी दल में सम्मिलित हो गई थी।

श्यामजी के विचारों एवं कार्यों में दृढ़ता एवं स्पष्टता थी, जो उन्हें अपने गुरु महर्षि दयानन्द से सहजरूप में ही प्राप्त थी। विचारों की इसी दृढ़ता तथा स्पष्टता के कारण श्यामजी ने राष्ट्रीय आन्दोलन का उचित मार्गदर्शन किया। श्यामजी ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ मुम्बई के समाज सुधार आन्दोलन से किया। माधवदास रघुनाथ दास के द्वारा प्रारम्भ किए गए विधवा विवाह आन्दोलन में श्यामजी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्वामी दयानन्द तो उनके प्रेरणा स्रोत थे ही। स्वामी जी के निर्वाण के उपरान्त रूढ़िवादियों को उत्तर देने के लिए श्यामजी ही सक्षम थे। उनकी इसी विशेषता के कारण 1889 में पूना के पण्डितों की चुनौती का सामना करने के लिए जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे ने उन्हें सादर आमन्त्रित किया था।

इसके पश्चात् श्यामजी ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को अपना लक्ष्य बनाया। उनका स्मरणीय कार्य है विदेशों में भी भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष की सुदृढ़ आधारशिला रखना। वहां रहकर उन्होंने इस आन्दोलन को दिग-दिगन्त तक पहुंचा दिया। श्यामजी के विषय में जर्मनी की पत्रिका ‘दि जेनाक्रिफ्ट’ ने लिखा था कि अंग्रेज श्यामजी कृष्ण वर्मा के आन्दोलन से उतने ही भयभीत है। जितने कि जर्मनी के द्वारा आक्रमण के भय से।

विदेशों में स्वाधीनता के आन्दोलन को स्थायी रूप देने के लिए श्यामजी ने जुलाई 1905 में लन्दन में ‘इण्डिया हाऊस’ खरीदा। इण्डिया हाऊस क्रान्तिकारियों का अड्डा था। यही पर स्वतन्त्रता के विषय में गुप्त मन्त्रणाएं होती थीं जिनसे क्रान्ति की चिन्गारी फूटती थी। 1905 में ही श्यामजी ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए ‘इण्डियन सोशियोलोजिस्ट, लंगदन’ नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। स्वाधीनता के विचारों के साथ-साथ इसमें सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों के विषय में भी पर्याप्त सामग्री रहती थी। इस पत्र को सुदृढ़ एवं स्थायी करने के लिए 1905 में ही श्यामजी ने ‘होमरूल सोसायटी’ का गठन भी किया।

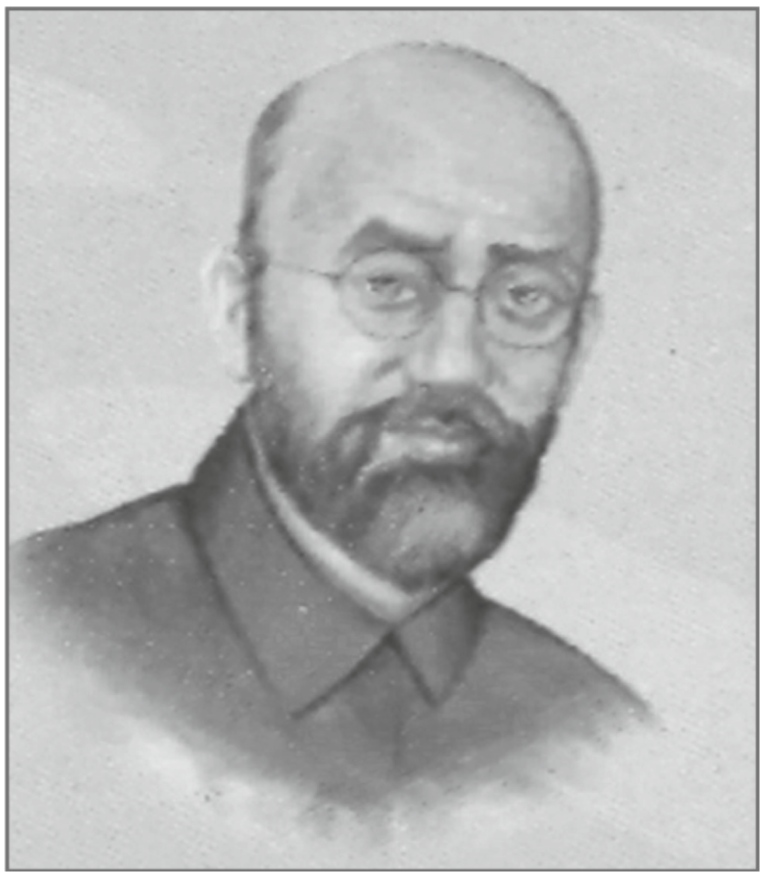

क्रान्ति के पक्षधर होने के साथ-साथ श्याम जी यह भी मानते थे कि बहिष्कार या असहयोग के द्वारा भी अंग्रेजी राज्य को निष्प्रभावी बनाया जा सकता था। महात्मा गांधी तो असहयोग आन्दोलन के पक्षधर थे ही। श्यामजी ने भी गांधी जी के नेतृत्व में 1920-21 में चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वाधीनता आन्दोलन को जो कुशल नेतृत्व प्रदान किया इससे राष्ट्रवादियों का क्षेत्र व्यापक होता गया। श्यामजी के प्रचार का जर्मनी प्रभृति यूरोपीय देशों में पर्याप्त प्रभाव पड़ा। वस्तुतः भारतीय राष्ट्रवादियों को जर्मनी का नैतिक तथा सैनिक समर्थन मिलना श्यामजी के प्रचार का ही परिणाम था। विदेशों में श्यामजी को पर्याप्त ख्याति प्राप्त हुई।

श्यामजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का सशक्त विरोध किया। उनके विरोध के कारण ही कई वर्षों तक एंग्लो अमेरिकन सन्धि न हो सकी। श्यामजी निर्भीक होकर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर लिखते थे।

अप्रैल 1912 में उन्होंने एक खुले पत्र में अमेरीकन प्रेजीटेण्ड टैफ्ट को इंग्लैण्ड के साथ सन्धि वार्ता के लिए धिक्कारा था क्योंकि उनकी दृष्टि में इंग्लैण्ड स्वयं दूसरे देशों को गुलाम बनाने वाला डाकुओं का शिरोमणि देश था। इस पत्र से प्रेरणा पाकर ही आयरिश मूल के अमेरिकियों ने ऐंग्लो अमेरीकन सन्धि के विरूद्ध आन्दोलन किया था जिससे वह सन्धिवार्ता विफल हो गई। इस प्रकार श्याम जी का क्षेत्र भारत की स्वतन्त्रता तक ही सीमित न था, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी उनका प्रचुर वर्चस्व था।

1905 में श्यामजी ने भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का लक्ष्य घोषित किया जबकि अन्य लोग औपनिवेशिक राज्य लेने के भी पक्षधर थे। इस सम्बन्ध में श्यामजी ने एक लम्बा लेख भी लिखा था। वे इंग्लैण्ड तथा भारत के सम्बन्ध को भेड़िये तथा भेड़ के सम्बन्ध की तरह देखते थे जिसमें भेड़िया किसी न किसी बहाने से भेड़ के प्राण लेने की सोचता रहता है। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचारों, आर्थिक, शोषण, राजनीतिक, दुरावस्था तथा नैतिक ह्रास का यथार्थ चित्रण किया। ‘वस्तुतः श्यामजी के स्पष्ट चिन्तन तथा लेखनी ने राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा निर्धारित की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के उस प्रचार को निरस्त कर दिया जिसके कारण अनेक भारतीय भी अंग्रेजी राज्य के प्रशंसक थे। श्यामजी की स्पष्ट धारणा थी कि भारत के सर्वतोमुखी पतन तथा आर्थिक पिछड़ेपन के लिए अंग्रेजी राज्य ही उत्तरदायी है। इसका समाधान केवल पूर्ण स्वतन्त्रता है। इसके लिए वे असहयोग एवं बहिष्कार को प्रमुख साधन मानते थे।

विदेशों में स्वाधीनता की ज्योति जलाते हुए भारत में भी श्यामजी ने राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। 1885 में रतलाम स्टेट के दीवान बने। 1888 में अजमेर नगर पालिका के अध्यक्ष बने। 1892 में मेवाड़ स्टेट कौंसिल के सदस्य बने तथा 1995 में जूनागढ़ स्टेट के दीवान बने।

1897 में लोकमान्य की गिरफ्तारी पर श्यामजी लंदन चले गए। 1899 में उन्होंने प्रेस स्वतन्त्रता पर जार्ज बर्नार्ड शा का समर्थन किया। 1899 में ही ट्रांसवाला युद्ध में अंग्रेजों के विरूद्ध प्रेजीडेंट क्रूजर का समर्थन किया। 1908 में श्यामजी पेरिस गए। उन्होंने 1909 में हुतात्मा मदन लाल ढींगरा का समर्थन तथा 1911 में हार्डिंग बम विस्फोट पर क्रान्तिकारियों का समर्थन किया। 1914 में उन्होंने जेनेवा के लिए प्रस्थान किया तथा 1919 में गांधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का समर्थन किया।

इस प्रकार अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय स्वाधीनता के लिए समर्पित कर देने वाला भारत माता का यह सपूत 31 मार्च 1930 को चिर निन्द्रा में सो गया। 22 अगस्त 1932 को उनकी धर्मपत्नी भानुमती का भी देहावसान हो गया। श्यामजी की अस्थियां भारत की धरोहर थी। वह भारत को अब प्राप्त हो गयी।

- बी-266 सरस्वती विहार, दिल्ली-34

‘‘पितृ पक्ष का वैदिक पक्ष’’

– सोम प्रकाश

आर्यजन देवों, ऋषियों एवं पितरों के चरित्र से प्रेरित होकर अपने दैनिक व्यवहारों को पूर्ण करते हुए सन्तति को ही नहीं अपितु मानव मात्र को भी सन्मार्ग के पथिक बनने की प्रेरणा देते हुए समाज में आदर्श उपस्थित किया करते हैं। प्राच्य ऋषियों ने परमपिता परमात्मा का वैदिक ज्ञान जन साधारण तक पहुंचाया। उसी ऋषि परम्परा में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने समाधिस्थ होकर ईश्वर साक्षात्कार करते हुए वेदज्ञान गंगा को अविरल रूप से प्रवाहित होते रहने के उद्देश्य से जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने यज्ञीय जीवन हेतु सभी के उपयोगार्थ अनेक ग्रन्थों की रचना करके सत्यार्थ को प्रकाशित किया। यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म। यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा जाता है। पांच यज्ञ दैनिक करने का विधान शास्त्रों में है। सभी आर्यजन ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्व देव यज्ञ से परिचित हैं।

पञ्च यज्ञों के सम्बन्ध में महर्षि मनु का कहना हैः-

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।
(मनुस्मृति 3/70)

अर्थात् पढ़ना-पढ़ाना सन्ध्योपासना करना ब्रह्मयज्ञ है और ऋषि, देव, माता पिता आदि पितरों की सेवा सुश्रूषा तथा भोजनादि से तृप्ति करना पितृयज्ञ है। प्रातः सायं होम अर्थात् हवन करना देव यज्ञ है। मनुष्येतर प्राणियों अर्थात् कीटों, पक्षियों, कुत्तों तथा कुष्ठ व्यक्तियों, भृत्यों आदि आश्रितों के लिए भोजन देना भूतयज्ञ या बलिवैश्व देव यज्ञ कहलाता है अतिथियों को भोजन देना और सेवा द्वारा सत्कार करना अतिथि यज्ञ या नृयज्ञ कहलाता है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ‘ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका’ तथा ‘पञ्च महायज्ञ विधि’ में उपर्युक्त पञ्च यज्ञों के सम्बन्ध में विषद व्याख्या प्रस्तुत की है पितृ यज्ञ के दो भेद हैं- एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। जिस कर्म से विद्वान रूप देव, ऋषि और पितरों को सुखयुक्त करते हैं उसे ‘तर्पण’ कहते हैं। उसी प्रकार उन व्यक्तियों की श्रद्धा से सेवा करना ‘श्राद्ध’ कहलाता है। महर्षि के अनुसार ‘‘तर्पण आदि कर्म विद्यमान अर्थात् जो प्रत्यक्ष हैं, उन्हीं में घटता है मृतकों मेंनहीं क्योंकि उनकी प्राप्ति और उनका प्रत्यक्ष होना असम्भव है। इसी से उनकी सेवा भी किसी प्रकार से नहीं हो सकती किन्तु जो उनका नाम लेकर देवे वह पदार्थ उनको कभी नहीं मिल सकता। इसलिए मृतकों को सुख पहुंचाना असम्भव है। इसी कारण विद्यमानों के अभिप्राय से तर्पण और श्राद्ध वेद में कहा है। सेवा करने योग्य और सेवक अर्थात् सेवा करने वाले इनके प्रत्यक्ष होने पर यह सब काम हो सकता है।’’ तर्पण श्राद्ध आदि कर्म में सत्कार करने योग्य तीन हैं यथा देव, ऋषि और पितर।

पौराणिक बन्धु आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को पितृपक्ष के रूप में मानते हैं। इस लेख में पितृपक्ष का यथार्थ वैदिक पक्ष प्रस्तुत है।

शतपथ के अनुसार विद्वांसो हि देवाः अर्थात् सत्यधारी विद्वान ही देव कहलाते हैं। दो लक्षणों के पाये जाने से मनुष्यों की दो संज्ञा होती है अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्य कर्म करने वाले देव कहलाते हैं। सत्यव्रत आचरण करने वाले देव कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान होकर सर्वदा आनन्द में रहते हैं परन्तु उनसे विपरीत आचरण करने वाले मनुष्य दुःख को प्राप्त होकर प्रतिदिन पीड़ित ही रहते हैं।

ऋषयों मन्त्रद्रष्टारः अर्थात् वेद मन्त्रों के अर्थ जानने वाले ऋषि कहलाते हैं।

पितरों की कोटि में निम्नलिखित हैं- सोमसद्, अग्निष्वात्ता, बर्हिषद्, सोमपा, हविर्भुज, आज्यपा, सुकालिन, यमराज, पितृ, पितामह, प्रपितामह, मातृ, पितामही, प्रपितामही, सगोत्र, आचार्य तथा सम्बन्धी आदि। महर्षि ने पितरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है ‘‘जो ईश्वर और सोमयज्ञ में निपुण और जो शान्त्यादिगुण सहित हैं वे सोमसद् कहाते हैं। अग्नि जो परमेश्वर वा भौतिक उनके गुण ज्ञात करके जिनने अच्छे प्रकार अग्निविद्या सिद्ध की है, उनको अग्निष्वात्ता कहते हैं। जो सबसे उत्तम परब्रह्म में स्थिर होके शम दम सत्य विद्यादि उत्तम गुणों में वर्तमान हैं, उनको बर्हिषद् कहते हैं। जो यज्ञ करके सोमलतादि उत्तम औषधियों के रस के पान करने और कराने वाले हैं, तथा जो सोमविद्या को जानते हैं, उनको सोमपा कहते हैं। जो अग्निहोत्रादि यज्ञ करके वायु और वृष्टि जल की शुद्धि द्वारा सब जगत् का उपकार करते, और जो यज्ञ से अन्नजलादि की शुद्धि करके खाने पीने वाले हैं उनको हविर्भुज कहते हैं। आज्य कहते हैं घृत स्निग्धपदार्थ और विज्ञान को।

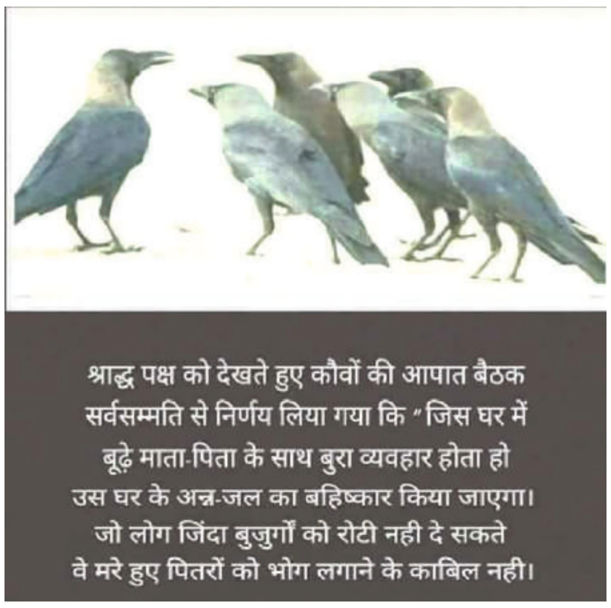
श्राद्ध पक्ष को देखते हुए कौवों की आपात बैठक
सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि “जिस घर में
बूढ़े माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार होता हो
उस घर के अन्न-जल का बहिष्कार किया जाएगा।
जो लोग जिंदा बुजुर्गों को रोटी नही दे सकते
वे मरे हुए पितरों को भोग लगाने के काबिल नही।

जो उसके दान से रक्षा करने वाले हैं उनको आज्यपा कहते हैं। मनुष्य शरीर को प्राप्त होकर ईश्वर और सत्यविद्या के उपदेश का जिनका श्रेष्ठ समय और जो सदा उपदेश में ही वर्तमान हैं उनको सुकालिन कहते हैं। जो पक्षपात को छोड़के सदा सत्य न्याय व्यवस्था ही करने में रहते हैं, उनको यमराज कहते हैं। जो वीर्य के निषेकादि कर्मों को करके उत्पत्ति और पालन करने और चौबीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्याश्रम से विद्या को पढ़े उसका नाम पिता और वसु है। जो पिता का पिता हो और चवालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य से विद्याभ्यास कर पक्षपात रहित होकर दुष्टों को रूलाने वाला है। उसका नाम पितामह है। जो पितामह का पिता और आदित्य के समान उत्तम गुणों का प्रकाशक अड़तालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्याश्रम से विद्या पढ़के सब जगत् का उपकार करता हो, उसको प्रपितामह और आदित्य कहते हैं तथा जो पित्रादिकों के तुल्य पुरुष हैं उनकी भी पित्रादिकों के तुल्य सेवा करनी चाहिए। पित्रादिकों के समान विद्या स्वभाव वाली स्त्रियों की भी अत्यन्त सेवा करनी चाहिए। जो समीपवर्ती ज्ञाति के योग्य पुरुष हैं, वे भी सेवा करने के योग्य हैं। जो पूर्ण विद्या के पढ़ाने वाले, श्वसुरादि सम्बन्धी तथा उनकी स्त्री हैं उनकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिए।’’

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्।
स्वधा स्थ तर्पयत् में पितृन्।।
(यजु. 19/58)

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में पञ्चमहायज्ञ विषय के अन्तर्गत महर्षि ने उपर्युक्त मन्त्र का अर्थ इस प्रकार किया है-

‘‘पिता वा स्वामी अपने पुत्र, पौत्र स्त्री और नौकरों को इस प्रकार आज्ञा देवे कि जो जो हमारे मान्य पिता, पितामहादि, माता, मातामहादि और आचार्य तथा इनसे भिन्न भी विद्वान लोग, जो अवस्था वा ज्ञान में बड़े और मान्य करने योग्य हैं तुम लोग उनकी उत्तम-उत्तम जल, रोगनाश करने वाले उत्तम अन्न, सब प्रकार के उत्तम फलों के रस आदि पदार्थों से नित्य सेवा किया करो, कि जिससे वे प्रसन्न होके तुम लोगों को सदा विद्या देते रहें। क्योंकि ऐसा करने से तुम लोग भी सदा प्रसन्न रहोगे और ऐसा विनय सदा रक्खो कि हे पूर्वोक्त पितर लोगों! आप हमारे अमृतरूप पदार्थों के भोगों से तृप्त होइये, और हम लोग जो जो पदार्थ आप लोगों की इच्छा के अनुकूल निवेदन कर सकें, उन-उन की आज्ञा किया कीजिए। हम लोग मन, वचन, और कर्म से आपके सुख करने में स्थित हैं, आप किसी प्रकार का दुःख न पाइये। क्योंकि जैसे आप लोगों ने बाल्यावस्था और ब्रह्मचर्याश्रम में हम लोगों को सुख दिया है वैसे ही हमको भी आप लोगों का प्रत्युपकार करना अवश्य चाहिए, कि जिससे हम लोगों को कृतघ्नता दोष न प्राप्त हो।’’

यज्ञोपवीत के तीन सूत्र ऋषि ऋण, देव ऋण और पितृऋण से उऋण होने की स्मृति दिलाते हैं। आर्यजन तीनों प्रकार के ऋणों से उऋण होने के लिए ऋषियों, देवों और पितरों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के पक्ष में रहे हैं। वे न तो कभी उनके विपक्ष में रहे और न कभी विरोध में रहेंगे। विरोध तो अनार्यों द्वारा किया जाता है आर्यों द्वारा नहीं। पितरों में श्रद्धा रखनी चाहिए। पितरों का तर्पण और श्राद्ध करना सभी का कर्त्तव्य है।

दिवंगत माता पितादि के चरित्र को श्रद्धापूर्वक धारण करके आचरण करना भी श्राद्ध की कोटि में आता है। दैनिक पञ्चमहायज्ञ करना प्रत्येक द्विज का कर्त्तव्य है। पितरों की सेवा सुश्रूषा करना सभी का धर्म है। जब व्यक्ति सेवा करने को तत्पर हो और बिना कहे ही उनकी सुख सुविधाओं को पूर्ण करके तृप्त कर दे तो समझो पितृतर्पण हो रहा है। इसी प्रकार उनकी श्रद्धा से सेवा करना श्राद्ध है। जिस परिवार में दैनिक यज्ञ होता है वह कुल धन्य है।

पौराणिक बन्धु दैनिक न सही किन्तु वे वर्ष में दो सप्ताह आश्विन कृष्णपक्ष अर्थात् पितृपक्ष के समय तो पितरों में श्रद्धा रखते हुए श्राद्ध करते ही हैं। इसमें किञ्चित अन्तर यह है कि जीवित पितरों को यहां स्थान प्राप्त नहीं हो पाया अर्थात् यह पितृपक्ष मात्र मृतक पितरों की श्रद्धा तक ही सीमित बनकर रह गया है। यह बहुत शोक का विषय है। क्या अच्छा हो यदि सभी व्यक्ति दुराग्रह त्याग कर वैदिक पथ के अनुगामी होकर धर्म की मूल भावना को हृदयंगम करके इहलोक और परलोक को सफल बनाने के लिए पितृपक्ष में ही सही पितरों के पक्ष में दृढ़व्रत लें अर्थात् पितृपक्षी हो कदापि पितरों से विमुख न हों। परमपिता परमात्मा कहता है- अनव्रतः पितुः पुत्रः अर्थात् पुत्र पिता का अनुव्रती हो। यदि पुत्र पिता का अनुव्रती होगा तो पुत्र की सन्तान भी उसका अनुगमन करने वाली होगी। इस प्रकार से सनातन चली आ रही वैदिक परम्परा का निर्वहन अबाधगति से भविष्य में भी होता रहेगा इसमें किञ्चित भी सन्देह नहीं।

संसार के भौतिक पदार्थों का संचय अर्थ से सम्भव है अर्थात् सुख सुविधाएं धन से क्रय की जा सकती हैं परन्तु पितरों का आशीर्वाद क्रय नहीं किया जा सकता। यदि पितर श्रद्धापूर्वक प्रदान किये गये पदार्थों अर्थात् श्राद्ध कर्म से तृप्त होंगे तो निश्चय ही उनके श्रीमुख से शुभाशीर्वाद की वर्षा होगी और उनके तर्पण से सन्तति को भी पितृऋण से उऋण होने की अवस्था प्राप्त होगी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार वैसे तो श्राद्ध कर्म दैनिक करना योग्य है परन्तु यदि ऐसा कभी सम्भव न हो तो प्रत्येक अमावस्या को तो श्राद्ध कर्म अवश्य करना चाहिए।

- वैयक्तिक सहायक जनपद न्यायाधीश,
गाजियाबाद

पृष्ठ 1 का शेष

पूज्या माता जगदीश रानी आर्या का अमृतसर में निधन

पूज्या माता जी नारी जाति के लिए एक उदाहरण बनकर गईं। उनके जीवन से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। यद्यपि उनकी शैक्षिक योग्यता बहुत अधिक नहीं थी किन्तु वे बड़े से बड़े विद्वानों से भी अधिक ज्ञानवान थीं क्योंकि उन्होंने ज्ञान को व्यवहार में परिवर्तित करके समाजसेवा का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। पूज्या माता जी के सभी पुत्रों एवं पुत्रियों को इस बात के लिए मैं साधुवाद देना चाहता हूँ कि उन्हें ऐसी आदर्श एवं आर्य विचारधारा से ओत–प्रोत माता की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मिशन आर्यावर्त की ओर से मैं पूज्य माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शांति की कामना करता हूँ।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में पूज्य माता जी के अनेक संस्मरण प्रस्तुत करके उनके व्यक्तित्व पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यद्यपि माता जी का जन्म एक पौराणिक परिवार में हुआ किन्तु उनको विवाह के उपरान्त उन्हें अपने पतिदेव स्व. श्री श्याम सुन्दर बजाज से आर्य समाज के विचार जानने का अवसर प्राप्त हुआ। धीरे–धीरे उनके संस्कार उन्हें आर्य समाज के कार्यों में अत्यधिक लग्न के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहे और एक समय आया जब वे आर्य महिला परिषद् पंजाब की अध्यक्ष बनीं। उन्होंने आर्य समाज के कर्मठ एवं संघर्षशील नेता श्री ओम प्रकाश आर्य के साथ मिलकर अमृतसर में महर्षि दयानन्द धाम की स्थापना करने का संकल्प किया और उसे आर्य जगत के महान् संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के आशीर्वाद एवं सहयोग से पूरा करके दिखाया। आज महर्षि दयानन्द धाम एक बहुत सक्रिय संस्था के रूप में कार्य कर रहा है और उसकी अपनी एक पहचान है। उसके निर्माण, उसके रख–रखाव और उसके लिए विभिन्न संसाधनों को जुटाने में पूज्या माता जगदीश रानी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। श्री ओम प्रकाश आर्य जी को माता जी अपना तीसरा पुत्र मानती थीं और इसका प्रमाण उन्होंने अन्तिम समय में अपने सुपुत्र श्री प्रवीण आर्य को यह कह करके दिया कि मेरे मरने के बाद एक पगड़ी (सेहरा) ओम प्रकाश आर्य के सिर पर भी बंधवाना, क्योंकि मैं तुम दोनों के अतिरिक्त ओम प्रकाश जी को भी अपना बड़ा पुत्र मानती हूँ। ये उनके हृदय की विशालता का एक विशेष उदाहरण है। बीच में पूज्या माता जी एवं ओम प्रकाश आर्य जी के मध्य कुछ मतभेद रहे किन्तु माता जी ने उन्हें कभी भी अपने मन पर संकीर्णता को नहीं आने दिया और वे उदारता के साथ उनके प्रति अपनी आत्मीयता रखती रहीं। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि अपने सक्रिय जीवन एवं आर्य सामाजिक कार्यों की वजह से माता जी को आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का उपप्रधान चुना गया। यह उनके व्यक्तित्व की विशालता का विशेष उदाहरण है। पूज्या माता जी गरीब कन्याओं की शादियाँ करवाने, गरीब परिवारों की सहायता करने, आर्य समाज के विद्वान् एवं पुरोहितों का आर्थिक सहयोग करने तथा विभिन्न आर्य समाजों में आर्थिक सहयोग देने में सर्वदा अग्रणी रहीं। उनके पास आर्य महिला परिषद् पंजाब की जो राशि जमा थी उसे उन्होंने विभिन्न आर्य समाजों एवं संस्थाओं में बाँटकर अपने सामाजिक दायित्व को निभाया। उनका जीवन एक वानप्रस्था का जीवन था। कई वर्ष पूर्व उन्होंने मुझे कहा था कि स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज मेरी प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। वे अब दुनिया में नहीं हैं। मैं उनसे वानप्रस्थ की दीक्षा लेना चाहती थीं। अतः अब आप इस कार्य को पूरा करें। मैंने माता जी से बड़ी विनम्रता के साथ कहा कि मैं तो आपके पुत्र के समान हूँ। आप स्वयं ही एक वानप्रस्था के रूप में अपना जीवन बिता रही हैं। आपकी दिनचर्या, आपके कार्य और आपके विचार, साधना, सेवा, तप एवं संघर्ष से परिपूरित हैं। अतः आपको मुझसे दीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं हैं। आप स्वयं संकल्पित होकर इस कार्य को कर रही हैं और निःसंदेह उन्होंने जीवन के अन्तिम श्वांस तक सेवा एवं प्रचार के कार्य को जारी रखा। माता जी ने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया। उनका परिवार प्रारम्भ के दिनों में गरीबी एवं विपन्नता से गुजरा। किन्तु उनकी तपस्या एवं उनके पुत्रों के पुरुषार्थ के परिणाम स्वरूप वे सम्पन्न एवं संभ्रान्त भरे पूरे परिवार को छोड़कर विदा हुई हैं। ऐसी तपस्विनी माता जी के जाने से निःसंदेह आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। किन्तु ईश्वर का नियम अटल है। प्रत्येक व्यक्ति को संसार में आना और कर्म करते हुए संसार से विदा होना यह प्रक्रिया शाश्वत् है। वे बहुत लम्बी आयु प्राप्त करके एक उदाहरण प्रस्तुत करके गई हैं, उनका जीवन पूरी तरह सफल हुआ है। उनके जाने का हम सभी को शोक नहीं करना चाहिए बल्कि उनसे प्रेरणा लेकर हमें अपने जीवन को आर्य समाज के कार्यों एवं सेवा के कार्यों से जोड़ना चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति की प्रार्थना की और परिवारजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।

इस अवसर पर स्वामी जी ने माता जी की स्मृति में एक स्मृति ग्रन्थ तैयार करने की भी घोषणा की। जिसका कार्य शीघ्र ही प्रारम्भ किया जायेगा। श्रद्धांजलि सभा दो मिनट के सामूहिक मौन एवं शांति पाठ के साथ सम्पन्न हुई। परिवार की ओर से माता जी के सुपुत्र श्री अरुण आर्य एवं श्री प्रवीण आर्य ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया और सभी पुरोहितों एवं विद्वानों को दक्षिणा देकर सम्मानित किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री धर्मपाल आर्य जी का देहावसान

श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी हुए सम्मिलित

ग्राम–कुलाना, जिला–झज्जर, हरियाणा के निवासी ठाकुर धर्मपाल सिंह जी का गत दिनों 87 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा एवं शांति यज्ञ 17 सितम्बर, 2021 को उनके निवास स्थान ग्राम–कुलाना में आयोजित की गई। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी एवं चौ. अजीत सिंह एडवोकेट पूर्व विधायक सम्मिलित हुए।

स्व. श्री धर्मपाल जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने उन्हें आर्य समाज का एक मजबूत स्तम्भ बताया और कहा कि स्व. श्री धर्मपाल जी स्वामी इन्द्रवेश जी के विशेष सहयोगियों में से एक थे। उन्होंने सदैव आर्य समाज के प्रचार एवं आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर भाग लिया। वे एक प्रतिष्ठित किसान भी थे और इस इलाके में जब भी कोई सामाजिक समस्या आई तो उन्होंने उसके समाधान के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सन् 1972 से लेकर 1980 तक जब स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी शक्तिवेश जी आदि संन्यासी आर्य सभा नामक राजनैतिक पार्टी के माध्यम से हरियाणा में एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरे थे। उस समय झज्जर जिले में श्री धर्मपाल आर्य भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते थे। उनका देहावसान निःसंदेह आर्य समाज के लिए एक बड़ी क्षति है। स्वामी जी ने उनके छोटे भाई उदय सिंह चौहान एवं उनके पूरे परिवार को प्रेरणा दी कि वे स्व. श्री धर्मपाल जी के पद्चिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज के कार्यों में अपना योगदान बढ़–चढ़कर देते रहें और अपने व्यक्तिगत जीवन में भी शराब, मांस एवं अन्य मादक पदार्थों से बचें, अपने जीवन में सदाचार एवं सात्विकता को अपनायें जिससे इस परिवार की प्रतिष्ठा पूरे क्षेत्र में बनी रहे। स्वामी आर्यवेश जी ने सार्वदेशिक सभा की ओर से स्व. श्री धर्मपाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

स्वामी आदित्यवेश जी एवं चौ. अजीत सिंह एडवोकेट ने भी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि देकर परिवारजनों के प्रति अपनी सांत्वना व्यक्त की। परिवार की ओर से श्री उदय सिंह चौहान एडवोकेट ने धन्यवाद ज्ञापित किया और शांति पाठ के साथ श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न हुई। ●

स्व. श्री धर्मपाल आर्य

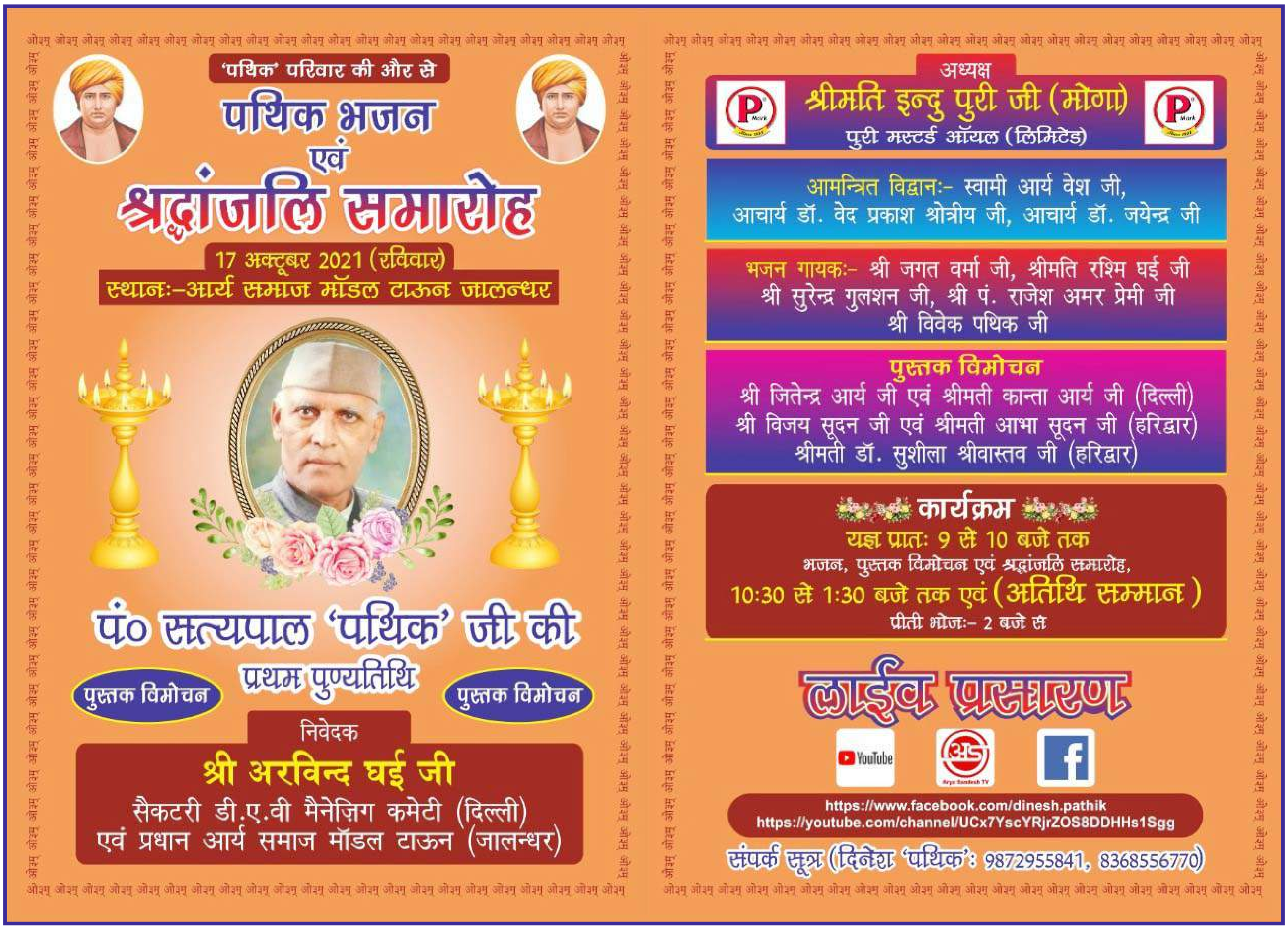

'पथिक' परिवार की और से

पथिक भजन

एवं

श्रद्धांजलि समारोह

17 अक्टूबर 2021 (रविवार)

स्थानः–आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर

पं० सत्यपाल 'पथिक' जी की

प्रथम पुण्यतिथि

पुस्तक विमोचन

पुस्तक विमोचन

निवेदक

श्री अरविन्द घई जी

सैकटरी डी.ए.वी मैनेज़िग कमेटी (दिल्ली)

एवं प्रधान आर्य समाज मॉडल टाऊन (जालन्धर)

अध्यक्ष

श्रीमति इन्दु पुरी जी (मोगा)

पुरी मस्टर्ड ऑयल (लिमिटेड)

आमन्त्रित विद्वानः– स्वामी आर्य वेश जी,

आचार्य डॉ. वेद प्रकाश श्रोत्रीय जी, आचार्य डॉ. जयेन्द्र जी

भजन गायकः– श्री जगत वर्मा जी, श्रीमति रश्मि घई जी

श्री सुरेन्द्र गुलशन जी, श्री पं. राजेश अमर प्रेमी जी

श्री विवेक पथिक जी

पुस्तक विमोचन

श्री जितेन्द्र आर्य जी एवं श्रीमती कान्ता आर्य जी (दिल्ली)

श्री विजय सूदन जी एवं श्रीमती आभा सूदन जी (हरिद्वार)

श्रीमती डॉ. सुशीला श्रीवास्तव जी (हरिद्वार)

कार्यक्रम

यज्ञ प्रातः 9 से 10 बजे तक

भजन, पुस्तक विमोचन एवं श्रद्धांजलि समारोह,

10:30 से 1:30 बजे तक एवं (अतिथि सम्मान)

प्रीती भोजः– 2 बजे से

लाईव प्रसारण

https://www.facebook.com/dinesh.pathik

https://youtube.com/channel/UCx7YscYRjrZOS8DDHHs1Sgg

संपर्क सूत्र (दिनेश 'पथिक': 9872955841, 8368556770)

8 अक्टूबर 36वीं पुण्यतिथि पर विशेष

युवा हृदय सम्राट क्रांतिकारी सामाजिक क्रांति के प्रेरक कर्मयोगी श्री मदन सिंह आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती के वैचारिक क्रांति के योद्धा, आर्य समाज और आर्य वीर दल के सिपाही, महान देशभक्त, सामाजिक क्रांति के उद्बोधक, युवकों के हृदय में राष्ट्रीय एकता और अखंडता के मजबूत इरादों का बीजारोपण करने वाले कर्मयोगी श्री मदन सिंह आर्य अपने अल्प जीवनकाल में इतना बृहद कार्य करके चले गए कि युगों–युगों तक उनका नाम इतिहास के पन्नों में याद किया जाता रहेगा। आने वाली युवा पीढ़ियाँ उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर देश के लिए समर्पित होने के लिए संकल्पवद्ध होती रहेगी।

उनका जन्म 25 अक्टूबर 1931 को जोधपुर में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जोधपुर शहर में ही श्री उम्मेद हाई स्कूल में हुई। स्कूली शिक्षा के साथ साथ उन के जीवन पर महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता चला गया। देशभक्त क्रांतिकारियों के साथ रह कर वह भी 1947 की आजादी के असली हकदार बन गए। आर्य समाजों के कार्यक्रमों और आर्य वीरदल के शिविरों में सक्रिय भाग लेते थे। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से राजस्थान प्रांत में, जोधपुर, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली, पीपाड़ अनेकानेक स्थानों पर क्रांति एवं बगावत की ज्योति प्रज्ज्वलित की।

20 अप्रैल 1951 को भारतीय सेना में चले गए उन्होंने गोवा मूवमेंट की अग्रिम पंक्ति में भाग लिया। अपनी बटालियन के द्वारा उन्होंने फ्रांसीसियों को गोवा के किले के अंदर सुरा–सुंदरियों के साथ नग्नावस्था में रंगरेलियां मनाते गिरफ्तार कर बंदी बनाया।

1962 में भारत–चीन युद्ध 1965 में भारत–पाक लडाई और 1971 में फिर भारत–पाक युद्ध में सच्चे भारतीय सैनिक के रूप में भाग लिया परिणाम स्वरुप उन्हें अपनी योग्यता के आधार पर पदोन्नत कर रिसालदार बनाया गया। उन्होंने हाईएस्ट मिलिट्री एजुकेशन सर्टिफिकेट हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किये। उनको पाकिस्तान की 1965 की लड़ाई में भारतीय सेना में, रक्षा मेडल एवं समर सेवा स्टार से सम्मानित किया गया। उनकी इन उपलब्धियों से पता चलता है कि श्री मदन सिंह आर्य शारीरिक एवं मानसिक रुप से पूर्ण परिपक्व थे। 25 मई 1972 में उन्होंने सेना से डिस्चार्ज ले लिया। इस समय वे आर्म्ड कोर में रिसालदार मेजर थे।

परिश्रम एवं योग्यता के आधार पर मदन सिंह आर्य सेना में जल्दी ही जूनियर कमीशन ऑफिसर बन गए। उन्हें खेलकूद का बहुत शौक था। सर्विसेस बॉक्सिंग प्रतियोगिता में उन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

जब–जब सेना से छुट्टियों पर आते वे अपना संपूर्ण समय आर्य वीर दल के माध्यम से पूरे राजस्थान प्रांत में दौरे करते और युवकों के चरित्र निर्माण, योगाभ्यास, जिम्नास्टिक, बॉक्सिंग, मलखंभ, सैनिक शिक्षा, प्राथमिक चिकित्सा आदि की शिक्षा का प्रचार व प्रसार करते।

श्री मदन सिंह आर्य के पास चरित्र रूपी महान खजाना था जिन महान कार्यों के लिए उनका जन्म हुआ वास्तव में राष्ट्र को उनके कार्यों की आवश्यकता थी। उनका सम्पूर्ण जीवन नौजवानों को संगठित कर अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना से देश की एकता और अखंडता की सुरक्षा के लिए सांप्रदायिक सद्भावना बनाने के लिए लगा रहा। उनका कहना था कि सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक विषमता को दूर करने के लिए सबसे पहले नौजवानों को क्रांतिकारी कदम उठाना चाहिए, ताकि हमारे राष्ट्र का चरित्र निर्माण हो सके। उनका सारा जीवन सादा और उच्च विचारों व कर्म से ओत–प्रोत एवं संघर्ष साधना का प्रतिरूप रहा।

मदन सिंह आर्य सौम्य विद्रोही थे, उनका जीवन कर्मठता, साधना और संभावनाओं से भरपूर था। उन्होंने 40 वर्ष राष्ट्रीय समाज की एक समाज सुधारक की भांति निस्वार्थ भावना से सेवा की। वे महर्षि दयानंद के वैचारिक आंदोलन के भागीदार आर्यसमाजी थे। युवकों में अपनी कार्य पद्धति, तर्क शक्ति और वैज्ञानिक व्याख्या से अमिट छाप छोड़ते थे।

वे जहां भी जाते मूर्तिपूजा, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, अंधविश्वास, पाखंड, छुआछूत, जातिवाद और धार्मिक अंधता का स्पष्ट एवं कठोर शब्दों में तीव्र आलोचना करते एवं खुले शास्त्रार्थ की चुनौती देते थे। उन्होंने कहा कि कुप्रथाएं हमारे राष्ट्र की नैतिकता को विश्व भर में कलंकित करती है। अतः युवकों को संगठित होकर जड़वादी नीतियों के विरूद्ध एवं अज्ञान, अन्याय और अभाव के खिलाफ आंदोलन करना चाहिए, ताकि एक विशुद्ध नए समाज की संरचना हो सके। मदन सिंह जी प्रथम तो समाज में श्रेष्ठ व्यक्ति का निर्माण और द्वितीय में समाज को जागृत करना चाहते थे।

कर्मयोगी मदन सिंह आर्य

सर्वप्रथम 1972 में राजस्थान में प्रान्तीय जिम्नास्टिक संघ की स्थापना स्वयं के कर कमलों द्वारा और प्रान्त के संघ के सचिव पद को भी सुशोभित किया। तत्पश्चात लंबे संघर्ष के बाद प्रांतीय स्तर की 1984–85 ई. में मुक्केबाजी (बॉक्सिंग) संघ की नीव भी आप द्वारा रखी गई।

आपके द्वारा प्रशिक्षित कई युवक राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त करने में सफल रहे। कई वर्षों तक राजस्थान के आर्य वीरदल के अधिष्ठाता पद पर कार्य कर के राष्ट्रीय स्तर के आर्य वीर दल शिविरों में बौद्धिक एवं शारीरिक प्रशिक्षण देते रहे। वे आर्य समाज के कई वर्षों तक मंत्री रहे। महर्षि दयानंद स्मृति भवन जिसमें महर्षि को जहर दिया गया था एवं जो 1973 में राज्य सरकार द्वारा आर्य समाज को प्राप्त हुआ उस भवन को मदन सिंह आर्य ने आर्य युवकों का प्रेरणा स्थल बनाया।

मदन सिंह आर्य अपने अल्प जीवन काल में पूरे आत्मविश्वास एवम आत्म–गौरव की ज्योति हजारों युवकों में जलाकर चले गए। उनकी ओजस्वी वाणी बौद्धिक व्याख्यान वह तर्कसंगत वैज्ञानिक विचार पद्धति ने विशेषकर नवयुवकों को आकृष्ट किया। वह जहां भी जाते उठते बैठते नव जवानों का काफिला उनके साथ लगा रहता।

मदन सिंह आर्य का जीवन सफल जीवन था, क्योंकि उनका समस्त जीवन मानव कल्याण में मुख्य रुप से नौजवानों के उत्थान में लगा रहा। इस भौतिक जगत में वह देव ऋण से मुक्त हो गए। इससे महान मूल्य किसी इंसान के जीवन का और हो भी क्या सकता है?

महर्षि दयानंद से प्रेरणा लेकर मदन सिंह यानी हमारे प्रिय ''मदन भाईसा'' ने आर्यवीर दल नामक संगठन के माध्यम से एक क्रांति का सूत्रपात किया था। उनके पुरुषार्थ से आर्य समाज में नई चेतना आई। आर्य समाज की यज्ञ अग्नि को ठंडा करने वाले षड्यंत्रकारियों से संगठन को मुक्ति मिली तथा आर्य समाज में नए रक्त का संचार हुआ परिणामतः समाज के तीन शत्रु अज्ञान अन्याय एवं अभाव के विरुद्ध संघर्ष का जोरदार सूत्रपात हुआ।

भारतीय दर्शन के अनुसार मदन सिंह आर्य अपने पूर्व जन्म के संस्कार व तत्कालीन जीवन के पुनीत कर्मों से एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के पुरुष थे। उस पुण्य आत्मा ने हजारों हजारों युवकों को पुण्य कमा कर दिए। अपने जीवन की आखिरी यात्रा में वह नागरिक सुरक्षा सिविल डिफेंस में सी.डी.आई. के पद पर जोधपुर में कार्यरत रहे। उन्हीं दिनों में माउंट आबू पर एनसीसी कैडेट्स को सुरक्षा के मर्म को बताते हुए अपने पंच भौतिक तत्वों से बने शरीर को 8 अक्टूबर, 1985 को सायं 6.45 बजे छोड़ दिया।

आर्य जगत का महान पुरुष आचार्य महर्षि दयानंद का अनन्य भक्त भारत माता के सपूत को ईश्वर ने हमारे बीच से हमेशा के लिए उठा लिया। हजारों आर्यवीर युवकों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ–साथ उनके कार्यो को पूरा करने का संकल्प लेंगे, ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए वह भी एक प्रेरणा के स्रोत बन सकें।

उनका उद्बोधन

''आर्य वीर दल'' स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य संस्कृति के आधार पर युवकों में चरित्र निर्माण करता है उनमें राष्ट्रीय विश्वबंधुत्व एवं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का संचार करता है। मनुष्यों में मानवीय गुणों को पल्लवित करता है। समय प्रवाह के साथ–साथ समाज में उत्पन्न अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दास प्रथा, अस्पृश्यता, नारी उत्पीड़न जैसी कुरीतियों को नेस्तनाबूत कर समाज में पुनः वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता एवं कल्याणकारी परंपराओं का निर्वाह कराना ''आर्य वीर दल'' का प्रमुख लक्ष्य है। इस कार्य हेतु शारीरिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास के पथ प्रशस्त करता है। महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने एवं सौम्य समाज की रचना के लिए संघर्षरत रहा है। अतः अधिक से अधिक संख्या में ''आर्य वीर दल'' की विचारधारा से जुड़ना चाहिए। – स्वर्गीय मदन सिंह आर्य

– विनीत
नारायण सिंह आर्य, पूर्व उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

सब तालों की एक ही ताली–स्वदेशी शिक्षा प्रणाली

– महावीर धीर

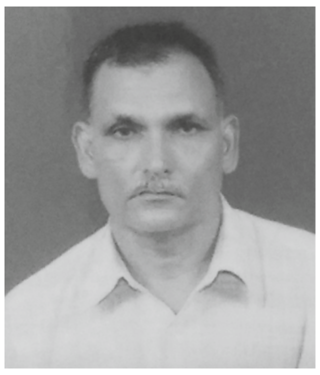

आज पूरे विश्व में विशेष रूप से भारत में अपराध, भ्रष्टाचार, अखाद्य सामग्री उत्पादन, नकली दूध, घी तथा दवाइयों के कारोबार बढ़ते जा रहे हैं। हत्या के विरुद्ध कठोर नियम हैं लेकिन हत्याएं और आत्महत्याएं बढ़ती जा रही हैं। कारण क्या है? कारण यह है कि मानव का निर्माण नहीं हो रहा है। यह भारत भूमि सदा–सदा से विश्व के लिए मानव निर्माण की पाठशाला रही है, लेकिन समय की उथल–पुथल में सब उलट–पलट हो गया। देसी राजाओं की फूट, विद्वानों की स्वार्थपरता तथा अनध्ययन ने छूआछूत, ऊंच–नीच और जात–पात में समाज को बांट दिया। विदेशियों ने अवसर देख खूब मनमानी की। स्वदेशी शिक्षा के ढांचे को समूल नष्ट कर दिया। लम्बी पराधीनता में थोपी गई शिक्षा और संस्कृति का ही अभ्यास होता रहा।

निरन्तर बलिदानों की श्रृंखला से प्राप्त स्वतंत्रता के बाद भी अंग्रेजियत के संस्कारों में पली–बढ़ी समझौता परस्त सरकारों ने अंग्रेजी पद्धति की शिक्षा को ही बढ़ावा दिया। उन्होंने न गांधी की बुनियादी शिक्षा को अपनाया, न रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित 'शान्ति निकेतन' पद्धति को देश में बढ़ाया और न ही आर्यसमाज द्वारा देश भर में संचालित की गई स्वदेशी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को ही पनपने दिया। अंग्रेजों द्वारा संचालित पद्धति को ही देश में बढ़ाया गया। उस पद्धति से पढ़े लिखों को ही सरकारी सेवा में आज तक लिया जा रहा है। सभी प्रकार की शिक्षा, चिकित्सा, न्याय व संपर्क अधिकतर अंग्रेजी में किया जा रहा है। इस पद्धति से तो कभी भी भारतीय भाषाओं और संस्कृति का विकास सम्भव नहीं हो सकता। इसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन बन गई। मातृ भाषाओं व राष्ट्रभाषा के स्थान पर अंग्रेजी का महत्त्व बढ़ता गया। आज मातृभाषा बोलने पर छात्रों को दंडित किया जाता है। शिक्षा अंग्रेजी से बंध गई है। छात्रों की गति मंद हो गई है। भारतीय देव संस्कृति नष्ट, भ्रष्ट हो गई है। शिक्षा मंहगी से मंहगी होती जा रही है। नकल, नकली उपाधि पत्र, नकली संस्थाएं, प्रश्न पत्रों का परीक्षा पूर्व प्रकटीकरण, बेरोजगारी, अपराध, यौन अपराध, हत्याएं, आत्महत्याएं, नशा, लूट–खसोट, छीना–झपटी का ही चारों ओर साम्राज्य है। पुलिस बढ़ती जा रही है, कानून बढ़ते जा रहे हैं, लेकिन अपराध उनसे कई गुणा तेजी से बढ़ते जा रहे हैं।

'एकमात्र उपाय सर्वांगीण आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली'

आज की शिक्षा में छात्र शिक्षा के लिए आते जाते समय न खाने की वस्तुएं खाता है, न देखने योग्य दृश्य देखता है बल्कि नशा करना सीखता है, यौन अपराधों में फंसता है, बड़े–बड़े घोर क्रूर अपराधों में लिप्त होता जा रहा है। वह माता–पिता, शिक्षक व पुलिस किसी के नियंत्रण में नहीं है। देश की भावी पीढ़ी तेजी से पतन की ओर जा रही है। आखिर देश बचेगा कैसे? जबकि गुरुकुल पद्धति में छात्र संपूर्ण शिक्षा प्राप्ति काल में गुरुजनों के सानिध्य में रहता है। उसे वहां नशा करने या इधर–उधर व्यर्थ में घूमकर बिगड़ने के अवसर ही कहां? उसे निश्चित समय पर व्यायाम, स्नान, ध्यान, सोना, जागना और पढ़ना पड़ता है। मन बुद्धि को नियंत्रित करने के लिए आत्मा, परमात्मा, प्रकृति की सूक्ष्म शक्तियों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी जाती है। संसार की सर्वोत्तम विद्या योग की साधना करवाई जाती है। जिससे व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो जाता है। उसे जीवनोपयोगी एवं सामाजिक नियम पालन कराने के लिए किसी पुलिस, प्रशासन या व्यक्ति की आवश्यकता ही नहीं रहती है। गुरुकुल मानव निर्माण की सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है इसे नकारा नहीं जा सकता। भारतीय स्वदेशी शिक्षा प्रणाली यही है जिसे भारत में ही नकार दिया गया है। 'भारतीय शिक्षा, संस्कृति, भाषा, परिधान और खानपान को नकार कर अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है।

'गुरुकुलों पर आक्षेप'

गुरुकुलों पर आक्षेप लगाया जाता है कि वहां पर सब विषयों की शिक्षा नहीं दी जाती है। यह ठीक है, लेकिन आज अनेक गुरुकुलों में सभी विषयों की शिक्षा दी जा रही है। कोई कमी है तो उसे दूर किया जा सकता है। जहां भी मनुष्य रहेगा वहां कोई न कोई भूल या गलती अवश्य ही होगी लेकिन अन्य पद्धतियों की अपेक्षा गुरुकुल में वह सरलता से सुलझाई जा सकती है। गुरुकुल अंग्रेजी पद्धति के सर्वश्रेष्ठ विकल्प हैं, लेकिन इन्हें सरकारी संरक्षण नहीं मिला। अतः इनकी स्थिति डांवाडोल होती गई। फिर भी गुरुकुल ही आज भी भारतीय महान् संस्कृति के रक्षक बने हुए हैं। हम महान् देवत्त्व संस्कृति के रक्षक गुरुकुलों को सहयोग और सम्मान न देकर महापाप कर रहे हैं और उसके भयंकर दुष्परिणाम भोग रहे हैं, फिर भी हमारी आंखे बन्द हैं। हम स्थिति को समझ नहीं पा रहे हैं।

देश के गुरुकुलों को सहायता देकर उन्हें निःशुल्क, आवासीय, रुचि अनुसार, रोजगारपरक, समान, सर्वांगीण शिक्षा का केन्द्र बनाया जाए। धीरे–धीरे पूरे देश में गुरुकुल शिक्षा ही लागू की जाए। कक्षा 4 तक के विद्यालय नगर व गांव में रहें। कक्षा पांचवीं से आगे तक के विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय आदि संस्थाएं नगर गांव से सुदूर रमणीय स्थान पर हों। बालक–बालिकाओं के विद्यालय अलग–अलग और उचित दूरी पर हों। बालिकाओं को महिला अध्यापिकाएं तथा बालकों को पुरुष अध्यापक ही पढ़ाएं। बिना जाति पूछे सब का प्रवेश हो। विवाह योग्य आयु होने तक छात्र संस्था में ही रहें। भले ही वे रुचि अनुसार पढ़ें, शोध करें या रुचि अनुसार कार्य करें। कार्य के अनुरूप उन्हें पारिश्रमिक दिया जा सकता है। माता–पिता और शिक्षकों के सहयोग व सहमति से ही गोत्र, योग्यता, स्वभाव आदि का मिलान करके सामूहिक रूप से प्रतिवर्ष संस्था से ही विवाह संस्कार करके तथा योग्यता व रुचि अनुसार कार्य देकर, सम्मान के साथ घर भेजा जाए।

मनुष्य सात पीढ़ी के संस्कार लेकर मां के गर्भ में आता है लेकिन गर्भ समय में मां स्वास्थ्यप्रद ऋतुचर्या बरतते हुए भावनाएं भी उत्तम रखे तथा पांच वर्ष तक बालक के खान–पान और व्यवहार में समझ से काम ले, फिर दस वर्ष तक पिता गलती पर समझायें व ताड़ना का संतुलन बनाकर तथा अच्छे काम व व्यवहार पर प्रोत्साहन देकर उसे अनुशासित करता रहे, फिर गुरु भी अपने श्रेष्ठ आचरण, शिक्षा व व्यवहार से निरन्तर बालक को अनुशासित बनाता रहे। योग साधना से सात जन्मों के संस्कार शुद्ध हो जाते हैं। सब एक जैसे तो नहीं हो सकते लेकिन इस पद्धति से काफी विकार नष्ट होते जाते हैं। अच्छाई के प्रति लगाव और बुराई के प्रति दुराव बढ़ता जाता है। बुराई के प्रति भय और शर्म पैदा हो जाते हैं जिससे व्यक्ति बुराइयों से बचा रहता है। सात पीढ़ी तक माता–पिता और गुरु उत्तम से उत्तम मिलते जाएं तब जाकर मनुष्य देवता के समान बन जाता है। उसे दुनियां का कोई भी रूप, पैसा या सुविधा सच्चे मार्ग से डिगा नहीं सकता। सदियों से इस आर्यावर्त देश भारत में ऐसी परम्परा रही जिसके कारण से इसे विश्वगुरु कहा गया। आज तो पग–पग पर चारों ओर बिगड़ने के साधन विकसित हो गए हैं। आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

युवाओं के गुरुकुल संस्थाओं में रहने से समाज में शान्ति बनी रहेगी। युवा तो विवाह संस्कार के बाद रोजगार लेकर ही घर आएंगे। वे संस्कारित होकर घर आएंगे। उनके बिगड़ने की संभावना बहुत कम होगी। संतानों के गुरुकुल में रहने के कारण माता आदि को परस्पर एक दूसरे भाई से सहयोग लेना पड़ेगा जिससे समाज में भाई–चारा बना रहेगा। इस प्रकार हमारा समाज अपराध व भ्रष्टाचरण से मुक्त होकर स्वर्ग बन जाएगा। इसलिए हमारे को अपने बच्चे गुरुकुलों में ही पढाने चाहिए। प्रत्येक भारतीय को गुरुकुलों का सहयोग करना चाहिए। गुरुकुलों में जाकर उनके सहयोग और सुधार का यत्न करना चाहिए। वर्ष में एक बार तो अवश्य ही गुरुकुल में जाना चाहिए। दो चार गांवों को मिलकर अपना एक गुरुकुल बना लेना चाहिए। प्रत्येक खाप अपने गुरुकुल स्थापित करें। हमें सरकार की ओर नहीं देखना चाहिए। सरकारें कुछ नहीं करेंगी। गुरुकुलों से निकलने वाले युवा ही समय पर सरकारों को ठीक कर सकेंगे।

'गुरुकुलों के गुरु आदर्श हों'

गुरुकुलों के अध्यापक परमयोग्य, चरित्रवान्, कर्मठ, शिक्षा व अध्ययन अध्यापन में ही रुचि रखने वाले हों। भले ही ऐसे शिक्षक कम मिलेंगे, लेकिन वे सामान्य शिक्षकों से कई गुणा कार्य करने में सक्षम होंगे। वे योग्य, बड़े छात्रों से छोटे छात्रों को पढ़ाने का कार्य लेकर शिक्षा को गति बनाये रखेंगे, लेकिन किसी भी प्रकार से अयोग्य शिक्षक की नियुक्ति गुरुकुलों में न हो। तभी छात्र रूपी संयमित मानव का निर्माण संभव है। आदर्श शिक्षक ही आदर्श युवाओं का निर्माण कर सकेंगे। अध्यापक की जांच हर पल होती रहे। छात्रों के परीक्षण द्वारा, छात्रों से शिक्षकों के स्वभाव, कार्य निष्ठा, योग्यता, व्यवहार आदि के बारे में गोपनीय रूप से प्रत्येक छात्र से पूछा जा सकता है। प्रत्येक छात्र प्रत्येक शिक्षक को समूचे रूप में कितने अंक देता है यह जाना जाए। मुख्याध्यापक व प्राचार्य श्रेष्ठतम शिक्षकों को ही अनुभव व शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर बनाया जाए। प्रत्येक वर्ष प्रत्येक शिक्षक का प्रश्नावली द्वारा मूल्यांकन किया जाए। यदि शिक्षक में कोई भी कमी पाई जाए तो उसे शिक्षा विभाग से पृथक कर दिया जाए। शिक्षक निरीक्षण का कार्य बीस वर्ष के अनुभव वाले परखे हुए शिक्षक ही करेंगे।

शिक्षक ही परीक्षा लेगा और शिक्षक ही प्रमाणपत्र देगा। शिक्षक ही योग्यता व रुचि अनुसार रोजगार देगा। उच्च स्तरीय कक्षाओं में प्रवेश अध्यापक द्वारा भेजी गई सूची व छात्र की योग्यता व और रुचि के अनुसार होगा। छात्र को आवेदन भेजने की आवश्यकता नहीं होगी। विश्वविद्यालय या शिक्षा पटलों से भ्रष्टाचरण पनपता है उनकी आवश्यकता नहीं होगी।

आज के अथिकतर शिक्षक पढ़ाने में कम रुचि लेते हैं। ट्यूशन में अधिक रुचि रखते हैं। विद्यालयों में बीड़ी, सिगरेट व शराब तक पीते हैं। ताश खेलते हैं। विद्यालय व पटलीय परीक्षाओं में शराब व मांसाहार करके छात्रों की नकल कराते हैं। परीक्षाओं से पहले प्रश्नपत्र प्रकट करने के धंधे करते हैं। बोर्ड में तालमेल करके मनचाहे विद्यालयों में निरीक्षक व केन्द्र अधीक्षक बनकर नकल के ठेके लेते हैं। इस पद्धति की शिक्षा संस्थाओं से कभी भी देश को श्रेष्ठ नागरिक नहीं मिल सकते। इसलिए हर भारतीय को अब गुरुकुल शिक्षा को बढ़ावा देने में अपनी मन, बुद्धि की शक्ति लगानी चाहिए। तभी देश शक्तिशाली, समृद्ध तथा हर क्षेत्र में कार्यक्षम और अग्रणी बन सकेगा और कोई मार्ग नहीं है।

मो.:–9466565162

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

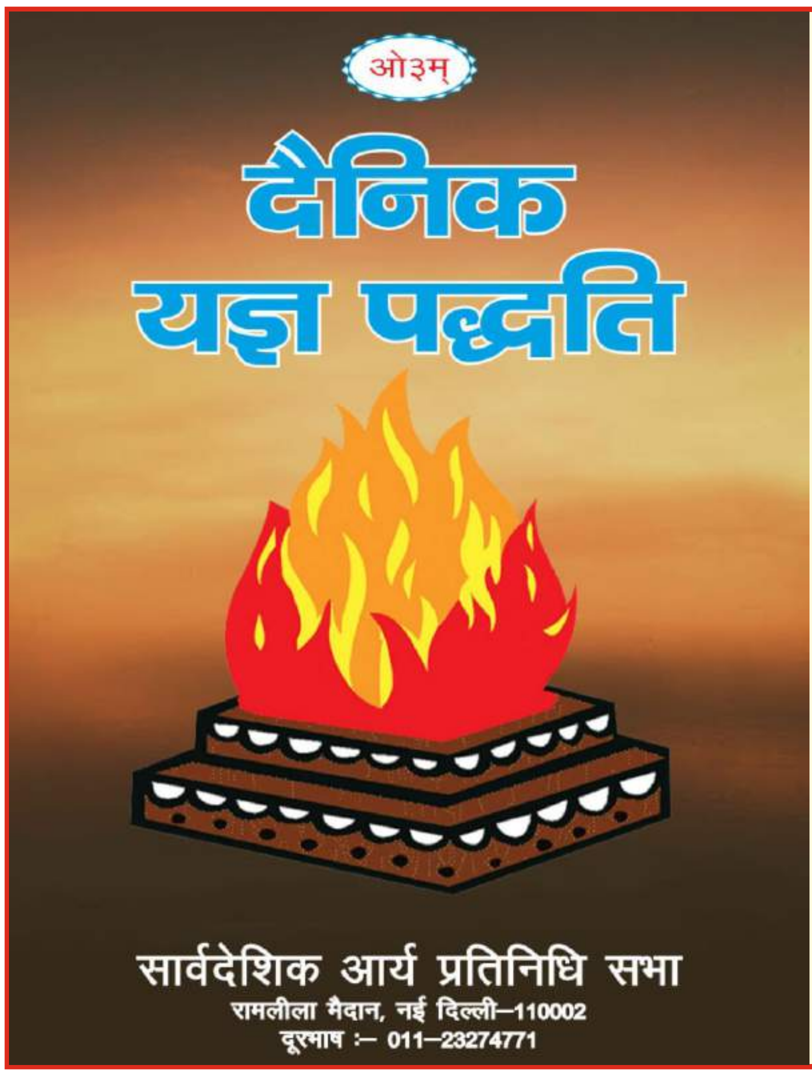

ओ३म्
दैनिक यज्ञ पद्धति
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
रामलीला मैदान, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

'दैनिक यज्ञ पद्धति'

आर्यजनों की भारी माँग पर आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगों तथा विशिष्ट बृहद्यज्ञों की सामान्य यज्ञ पद्धति (महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रणीत पंच महायज्ञ सहित) इस पुस्तक में समाहित की गई है। इसके अतिरिक्त विशेष मन्त्र, विशेष प्रार्थनाएँ तथा भजन संग्रह का भी समावेश इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। यज्ञ की यह पुस्तक अत्यन्त आकर्षक तथा सुन्दर टाईटल के साथ बढ़िया कागज के ऊपर छपकर तैयार है। 50 पृष्ठों तथा 23X36 के 16वें साईज की इस पुस्तक का मूल्य 18/ रुपये रखा गया है। लेकिन 100 पुस्तक लेने पर मात्र 1000/– रुपये में उपलब्ध कराई जा रही है। डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 011–42415359
मो.:–8218863689

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

वेदा:
ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

भारी छूट पर उपलब्ध

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 ● दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।